

प्रबन्ध का क्षेत्र उद्देश्य एवं महत्व

डा० नज़ाकत हुसैन
एसोसिएट प्रोफेसर
राजकीय महाविद्यालय
भोजपुर, मुरादाबाद

प्रबन्ध का क्षेत्र

सामान्यतया प्रबन्ध के सिद्धान्त सभी प्रकार के उपक्रमों, उपक्रमों के समस्त विभागों तथा प्रत्येक देश के सभी प्रकार के उपक्रमों पर लागू होते हैं।

1. प्रबन्ध के सिद्धान्त सभी देशों में छोटे हों या बड़े प्रजातान्त्रिक हो गैर प्रजातान्त्रिक विकसित हो या विकासशील सभी में अपनाये जा रहे हैं।

2. यद्यपि प्रबन्ध के सिद्धान्त प्रारम्भ में केवल व्यवसाय तथा उद्योगों तक ही सीमित थे परन्तु अब ये सिद्धान्त प्रत्येक प्रकार की संस्था अथवा संगठन में अपनाये जा रहे हैं।

3. प्रबन्ध के सिद्धान्त किसी भी उद्यम के समस्त विभागों यथा क्रय प्रबन्ध, विक्रय प्रबन्ध, उत्पादन प्रबन्ध, विपणन प्रबन्ध, वित्त प्रबन्ध तथा कर्मचारी प्रबन्ध में समान रूप से उपयोगी होते हैं।
4. अन्य मौलिक विज्ञानों की भांति प्रबन्ध भी एक विज्ञान है इसमें प्रयोग सिद्ध अध्ययनों के आधार पर बहुत सारे सिद्धान्त प्रतिपादित किये गये हैं, जो अकाट्य हैं और सभी देशों में सभी प्रकार के उपक्रमों पर लागू किए जाने योग्य हैं।
5. प्रबन्ध एक प्रक्रिया है, अतः देश, संस्कृति अथवा आकार से प्रभावित हुए बिना यह सभी संगठित क्रियाओं में लागू होता है।

प्रबन्ध के उद्देश्य एवं महत्व

1. संसाधनों का बेहतर उपयोग सम्भव
2. तकनीकी ज्ञान एवं अविष्कारों का सदुपयोग
3. समाज के विभिन्न पक्षों उपभोक्ता, कर्मचारी, उद्यमी, विनियोक्ता एवं सरकार के लिए लाभकारी
4. बढ़ती हुई औद्योगिक जटिलताओं जैसे विभिन्न उपक्रमों में समन्वय, नित नयी चुनौतियों का सामना, प्रतिस्पर्धा का सामना, उर्जा संकट तथा पर्यावरण प्रदूषण आदि समस्याओं का समाधान खोजने में सहायक

5. कम्प्यूटर तकनीक के विकास व उपयोग में सहायक
6. त्रिव प्रतिस्पर्धा के इस युग में कुशल प्रबन्ध के कारण न्यूनतम लागत पर उत्पादन किया जाना तथा विज्ञापन एवं विक्रय तकनीकों का प्रयोग कर लाभ को अधिकतम किया जाना सम्भव हो सका है।
7. बड़े आकार के उपक्रमों की स्थापना किया जाना तथा उनका कुशलतापूर्वक संचालन किया जाना सम्भव बनाने में सहायक
8. श्रम सम्बन्धी विभिन्न समस्याओं का समाधान किए जाने में सहायक
9. विभिन्न प्रकार के सामाजिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह किए जाने में उद्यमियों की सहायता करना

भारत में प्रबन्ध की आवश्यकता

1. आधारभूत सुविधाओं के विकास के लिए
2. ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए
3. बेरोजगारी दूर करने के लिए
4. भूमण्डलीकरण व उदारीकरण की समस्याओं का सामना करने के लिए
5. संसाधनों के पूर्ण सदुपयोग के लिए
6. निर्यात को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए

धन्यवाद

सन्दर्भ ग्रन्थ:—

व्यवसायिक प्रबन्ध के सिद्धान्त, डा० आर. सी. गुप्ता, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, आगरा ।